वार्षिक 150/- रुपये मई 2024 वर्ष 26 अंक 07 पृष्ठ - 28 मूल्य 15/-रु.

गोसम्पदा

महान क्रान्तिकारी-गोभक्त

मंगल पांडे

गोवंश-रक्षार्थ मोदी जी को जिताना अनिवार्य

सम्पादकीय

गोवंश-रक्षार्थ मोदी जी को जिताना अनिवार्य

परम गोभक्त मोदी जी की गारंटी - '1008 प्रतिशत'

गोमोदी की गारंटी, मोदी की गारंटी और मोदी की गारंटी...। ये शब्द आज देश के कोने–कोने में गुंजायमान हो रहे हैं। स्मरण रहे, इस समय लोकसभा का चुनाव सात चरणों में संपन्न होने जा रहा है, दो चरण समाप्त हो चुके हैं। इसलिए हमारा हार्दिक निवेदन है कि शेष बचे पांच चरणों में परम गोभक्त–राष्ट्रभक्त प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी को अपना अमूल्यवान वोट देकर हर कीमत पर जिताएं, ताकि गोमाता–गोवंश का संरक्षण–संवर्द्धन किया जा सके। उल्लेखनीय है कि आजादी मिलने से पूर्व गांधी जी ने स्पष्टरूप से कहा था – **"गोहत्या का प्रश्न देश की आजादी से भी अधिक महत्वपूर्ण है।"** तत्पश्चात देश के कर्णधार नेताओं ने एक स्वर में कहा था कि 'आजादी' प्राप्त होते ही कलम की नौक से पहला कानून गोहत्या पर पूर्ण प्रतिबंध लगाने के लिए बनाया जाएगा। दुर्भाग्य से ऐसा नहीं हो सका, क्योंकि देश पर प्रधानमंत्री के रूप में एक चरित्रहीन व्यक्ति जवाहर लाल नेहरू को थोप दिया गया, जो स्वयं गोमांस भक्षण (कथितरूप से) करता था, इसलिए उन्होंने गोहत्याबंदी का कानून नहीं बनाने दिया। साथ ही सत्ता बनाए रखने के लोभ में "मुस्लिम तुष्टिकरण नीति" का सहारा लेना प्रारंभ कर दिया। इस कटुसत्य से लगभग सभी देशवासी भलीभांति अवगत हैं।

महान गोभक्त लाला हरदेव सहाय जी ने तो स्पष्टरूप से लिखा है कि गोहत्या के लिए केवल और केवल जवाहर लाल नेहरू ही पूर्णतः दोषी हैं। उन्होंने कांग्रेस से त्यागपत्र देकर नेहरु के विरोध में चुनाव भी लड़ा, दुर्योग से वे चुनाव हार गये। लाला जी के अनुसार अनेक घटनाओं से यह पूर्णतः स्पष्ट हो जाता है कि गोरक्षा के प्रश्न पर नेहरु की कथनी और करनी में बहुत अंतर था। जहां तक लाला जी समझ पाये थे–नेहरु जी कानून के द्वारा गोहत्या बंद करने के पक्ष में नहीं थे, क्योंकि जब सेठ गोविंद दास (कांग्रेस सांसद) जी ने 27 नवंबर, 1953 को संसद में गोरक्षा बिल पेश किया तब नेहरु ने बड़ी चतुराई से बिना खुला विरोध किये इस बिल को पास नहीं होने दिया। वास्तव में नेहरु जी के इशारे पर कांग्रेस सांसदों पर दबाव डाला गया। यह सब कैसे हुआ, लाला जी के शब्दों में – पहले कुछ कांग्रेसियों द्वारा सेठ गोविंद दास जी पर दबाव डाला गया कि वे इस बिल को वापस ले लें। फिर जिस दिन इस बिल पर मतदान हुआ उस दिन कुछ उच्च पदाधिकारियों द्वारा कांग्रेस के सांसदों से सदन छोड़कर चले जाने को कहा गया।

हरदेव सहाय जी 17 जनवरी 1956 को लिखते हैं – 2 अप्रैल, 1955 को सेठ गोविंददास के उक्त बिल पर बोलते हुए नेहरु जी ने लोकसभा के सदस्यों से इस बिल को पूरी तरह अस्वीकार करने को कहा। इस पर संसद सदस्यों–सर्वश्री नंदलाल जी शास्त्री (रामराज्य पार्टी) और एन.सी. चटर्जी एवं वी.जी. देशपांडे (हिन्दू महासभा) ने कहा–इसका अर्थ यह है कि आप चाहते हैं–गोहत्या होती रहे। इसके परिणामस्वरूप सदन में हंगामा शुरू हो गया और नेहरु जी ने इस्तीफा देने तक की धमकी दी। लाला जी सन 1961 में लिखते हैं – कांग्रेस ने अपना चुनाव चिह्न बनाया है **बैलों की जोड़ी**, क्योंकि कांग्रेस पार्टी हिन्दुओं को अपनी ओर खींचना चाहती है, विशेषकर किसानों एवं महिलाओं को। चूंकि कांग्रेस पार्टी शासन करने वाली पार्टी है और गोहत्या के लिए मुख्यतया जिम्मेदार है, इसलिए इसका चुनाव चिह्न **'बैलों की जोड़ी'** के बजाय **'बूचड़खाना'** होना चाहिए। लाला जी ने नेहरु के खिलाफ अनेक पुस्तकें लिखीं, लेकिन जो सबसे आक्रामक पुस्तक लिखी, वह है – **"भारत माँ की दुर्दशा क्यों?"** यह पुस्तक मार्च 1961 में दिल्ली से प्रकाशित हुई है। इस पुस्तक में स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत में जारी गोहत्या के लिए मुख्यतः जवाहर लाल नेहरु को उत्तरदायी ठहराया गया है। हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए कि **"1857 की क्रांति"** का मूल कारण **'गोमाता'** ही थीं और महान क्रांतिकारी–गोभक्त मंगल पांडे ने इस विषय को उठाकर क्रांति का शंखनाद किया था।

अक्षरशः सत्य यह है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद देश को सन 2014 में प्रधानमंत्री के रूप में मा. नरेन्द्र मोदी जी ऐसे व्यक्ति मिले हैं जिन्होंने अविश्वसनीय और असंभव–से दिखने–लगने वाले कार्यों को भी साकार रूप दिया है। जैसे, लगभग पांच सौ वर्ष पश्चात राम जन्मभूमि–अयोध्या में राम मंदिर का पुनःनिर्माण (रामलला की प्राण प्रतिष्ठा), जम्मू–कश्मीर से धारा–370 हटाई गई, गरीबों एवं माताओं, बहनों–बेटियों के लिए अनेक कल्याणकारी योजनाएं आदि, जो सर्वविदित हैं। इसके अलावा सर्जिकल स्ट्राइक के द्वारा पाकिस्तान को सबक सिखाना और चीन को आंखों में आखें डालकर मुंहतोड़ उत्तर देना। इन सभी कार्यों को पूरा संसार खुली आंखों से देख रहा है और उनका लोहा मानने को बाध्य है। वस्तुतः पूरे विश्व में मोदी जैसा विराट व्यक्तित्व अन्य दूसरा कोई नहीं। इसलिए गोमाता–गोवंश के संरक्षण संवर्धन और भारत को पुनः विश्व गुरु बनाने के लिए मा. नरेन्द्र भाई मोदी जी को जिताना अनिवार्य है। अतः सभी देशभक्त–गोभक्त अपना अमूल्यवान वोट मोदी जी (भाजपा) को देकर अपना राष्ट्रीय कर्तव्य निभाएं और अपने बच्चों का भविष्य उज्ज्वल बनाएँ। यह कहना पूर्णतः समीचीन होगा कि मोदी की गारंटी – 1008 प्रतिशत रहती है।

(सम्पादक)

गोसम्पदा

वर्ष - 26 अंक-07 मई - 2024 पृष्ठ - 28

संरक्षक :
हुकुमचंद सावला जी

अखिल भारतीय गोरक्षा प्रमुख
दिनेश उपाध्याय जी
संकट मोचन आश्रम, सै. 6,
रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली–22
मो. : 9644642644
ईमेल : gosampada@gmail.com

सम्पादक :
देवेन्द्र नायक
संकट मोचन आश्रम, सै. 6,
रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली–22
मो. : 8130049868 कार्या. 011–26174732
ईमेल : gosampada@gmail.com

परामर्शदाता : प्रो. गुरुप्रसाद सिंह जी
मो. : 9838900596

प्रकाशक : राजेन्द्र प्रसाद सिंहल जी
मो. : 9810055638

प्रचार-प्रसार प्रमुख : जय प्रकाश गर्ग जी
मो. : 9654414174

व्यवस्थापक : रामानन्द यादव
मो. : 9958710672 कार्या. : 011–26174732

साज-सज्जा : सुमन कुमार

वैधानिक सूचना
'गोसम्पदा' से संबन्धित सभी वाद प्रकाशन तिथि से 3 माह के अंदर केवल नई दिल्ली स्थित न्यायालय में मान्य होंगे

सहयोग राशि
एक प्रति : रु. 15/–
वार्षिक : रु. 150/–
आजीवन : रु. 1500/–

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ
भूमि पर साक्षात् ईश्वर हैं गोमाता	04
पंचगव्य और इन्द्रलुप्त-चाई	07
गोमूत्र के विशेष गुण जो आप नहीं जानते!	08
गोभक्त और पूर्व 'राष्ट्रधर्म' संपादक आनन्द प्रकाश मिश्र 'अभय' जी का गोलोकवास	11
गाय है हमारी माँ	13
गोसेवा ही सच्ची राष्ट्र- सेवा	14
राज्य कर्मचारी उदासीनता छोड़ गोसंरक्षण करें	16
गोरक्षा और हमारा राष्ट्रीय कर्तव्य	18
Unveiling the Uniqueness of Indigenous Cows a Small Scientific Research Study	20
Panchgavya	22

हार्दिक निवेदन

सभी गोभक्त—गोप्रेमी बंधुओं से करबद्ध अनुरोध है कि वे इस पत्रिका का सदस्य अवश्य बनें और अन्य गोभक्तों को भी सदस्य बनायें। कृपया सभी लोग अपना वार्षिक अथवा आजीवन सदस्यता शुल्क निम्नलिखित बैंक व खाता नंबर में जमा कराएं—

पंजाब नेशनल बैंक, बसंत लोक, नई दिल्ली
खाता नम्बर – 04072010038910
IFSC CODE : PUNB0040710

नोट : शुल्क **"भारतीय गोवंश रक्षण संवर्द्धन परिषद"** के नाम पर जमा करें। सम्पर्क सूत्र : 011—26174732

मान्यता

पूजा पाराशर, स्वतंत्र लेखिका

भूमि पर साक्षात् ईश्वर हैं गोमाता

किसी भी कार्य को करने के लिए भाव की आवश्यकता होती है और यह भाव सकारात्मक व नकारात्मक दोनों प्रकार से उत्पन्न होता है। किसी कार्य को सफल बनाने के लिए सदैव सकारात्मक भाव की आवश्यकता होती है, जिसमें प्रेम समाहित होता है। प्रेम भाव से किया गया कार्य सेवा का रूप धारण करता है, जो पूर्णतः निस्वार्थ होती है और आज हमारी गोमाता–गोवंश के लिए इसी निस्वार्थ सेवा की आवश्यकता है।

आज हम कितना भी गोवंश संरक्षण की बात करें, गोसेवा की बात करें परंतु यह तब तक सफल नहीं होगा जब तक गाय के लिए वही प्रेम भाव, वही सेवा भाव उत्पन्न नहीं होगा जो अपनी माँ के लिए होता है। आज गोसेवा की बात अवश्य हो रही है परन्तु गाय की दशा देखी जाए तो अत्यंत ही दयनीय प्रतीत होती है। ऐसे में संरक्षण की बात हम तभी कर सकते हैं जब हमारी गोमाता सबला होगी। वह अपने सभी लाभ तभी दे सकती है जब व्यक्ति के हृदय में वही श्रद्धा, वही भाव हो जैसा कि हम सदैव वेद, पुराणों–शास्त्रों, गीता, महाभारत, रामायण, प्राचीन प्रत्येक पौराणिक कथाओं में पढ़ते–सुनते आए हैं। गाय अपने लाभ तभी दे सकती है जब महर्षि वशिष्ठ जैसा कोई सेवक हो जिसने विश्वरथ जैसे राजा को विश्वामित्र बना दिया, जिसका कारण भी स्वयं गोमाता ही थीं। गुरुनानक, गौतम, नामदेव, जमदग्नि या फिर विष्णु अवतार राम–कृष्ण ही क्यों न हों, सभी गाय के प्रेमी और पूजक रहे हैं।

आज हम कितना भी गोवंश संरक्षण की बात करें, गोसेवा की बात करें परंतु यह तब तक सफल नहीं होगा जब तक गाय के लिए वही प्रेम भाव, वही सेवा भाव उत्पन्न नहीं होगा जो अपनी माँ के लिए होता है। आज गोसेवा की बात अवश्य हो रही है परन्तु गाय की दशा देखी जाए तो अत्यंत ही दयनीय प्रतीत होती है। ऐसे में संरक्षण की बात हम तभी कर सकते हैं जब हमारी गोमाता सबला होगी।

महाभारत के अनुशासन पर्व में दिखाया गया है कि जब युधिष्ठिर पितामह से पूछते हैं कि ऐसी कौन सी वस्तु अक्षय होती है जिसके दान से पितर अधिक दिन तक और किसके दान से अनन्त काल तक तृप्त रहते हैं? पितामह भीष्म

युधिष्ठिर को उत्तर देते हुये कहते हैं कि यदि श्राद्ध में गाय का दही दान किया जाये तो उससे पितरों को एक वर्ष तक तृप्ति होती है। गाय के दूध से बने घृत मिश्रित खीर को भी दही के समान ही फल बताया गया है।

गव्येन दत्तं श्राद्धे तु संवत्सरमिहोच्यते।
यथा गव्यं तथायुक्तं पायसं सर्षिषा सह।।

महाभारत अनुशासनपर्व, अध्याय 88, श्लोक 5

गौ साक्षात यज्ञ है, एक अनुष्ठान है। इसके बिना किसी भी पवित्र विधि का सम्पन्न होना असंभव है। इसके बिना कोई भी यज्ञ संभव नहीं। देवता, ब्राह्मण की तृप्ति गौ द्वारा प्राप्त पंचगव्य आदि से है। महर्षि पाराशर के अनुसार ब्रह्माजी ने एक ही कुल के दो भाग कर दिए–एक भाग **'गाय'** और एक भाग **'ब्राह्मण'**। ब्राह्मणों में मंत्र प्रतिष्ठित हैं और गायों में हविष्य प्रतिष्ठित है। अतः गायों से ही सारे यज्ञों की प्रतिष्ठा है। स्कन्दपुराण में ब्रह्मा, विष्णु व महेश के द्वारा कामधेनु की स्तुति की गई है –

त्वं माता सर्वदेवानां त्वं च यज्ञस्य कारणम्।
त्वं तीर्थं सर्वतीर्थानां नमस्तेऽस्तु सदानघे।।

(अर्थात् हे अनघे! तुम समस्त देवों की जननी तथा यज्ञ की कारणरूपा हो और समस्त तीर्थों की महातीर्थ हो, तुमको सदैव नमस्कार है)। गोमाता के गुणों की व्याख्या असीम है, ऐसे गुण जिनके पीछे स्वयं भगवान श्री कृष्ण दीवाने थे। भगवान कृष्ण अपनी अधिष्ठात्री देवी गोमाता के सामने कभी चप्पल पहनकर नहीं जाते थे। एक बार की बात है जब कृष्ण यशोदा से कहते हैं – मैं बड़ा हो गया हूँ, मैं भी गौ चराने जाऊँगा। यशोदा कहती हैं – नहीं अभी तुम बड़े नहीं हुए हो। तब कृष्ण कहते हैं – नहीं देखो मैं चलने लगा हूँ। तब यशोदा ने कहा ठीक है, मैं तुम्हारे लिए खड़ाऊं बनवा देती हूँ। कृष्ण कहते हैं – नहीं मैया मुझे तो खड़ाऊं की जरूरत नहीं है, मैया देखो मेरी गैया भी तो खड़ाऊं नहीं पहनती है। यदि मेरे लिए बनवाओ तो मेरी गायों के लिए भी बनवानी पड़ेगी और वे जिद करने लगे। तभी यशोदा ने पंडितों को बुलाकर मुहूर्त निकलवाकर कृष्ण को गौ चराने की अनुमति दे दी। अष्टछाप के कवि नन्ददासजी के शब्दों में –

गोरज राजत साँवरें अंग।
देख सखी बन ते ब्रज आवत गोबिंद गोधन संग।।

भगवान श्रीकृष्ण को केवल गायों से ही नहीं अपितु गोरस (दूध, दही, मक्खन, आदि) से भी अद्भुत प्रेम था, उस प्रेम के कारण ही श्रीकृष्ण गोरस की चोरी भी करते थे। श्रीकृष्ण द्वारा ग्यारह वर्ष की अवस्था में मुष्टिक, चाणूर, कुवलयापीड हाथी और कंस का वध गोरस के अद्भुत चमत्कार के प्रमाण हैं और इसी गौ दुग्ध का पानकर भगवान श्रीकृष्ण ने दिव्य **'गीता'** संसार को दी।

वह क्षेत्र जहाँ गोमाता निवास करती हैं, वह अपने आप में पवित्र और धार्मिक स्थल होता है। वहाँ पर

समय व्यतीत करने से वही अनुभव होता है जो एक मंदिर या तीर्थ स्थान में अनुभव होता है। स्वयं वशिष्ठ जी ने गौपनिषद में कहा है :—

घृतक्षीरप्रदा गावो घृतयोन्यो घृतोद्भवाः।
घृतनद्यो घृतावर्तास्ता मे सन्तु सदा गृहे।।
घृतं मे हृदये नित्यं घृतं नाभ्यां प्रतिष्ठितम्।
घृतं सर्वेषु गात्रेषु घृतं मे मनसि स्थितम्।।
गावो ममाग्रतो नित्यं गावः पृष्ठत एव च।
गावो मे सर्वतश्चौव गवां मध्ये वसाम्यहम्।।

अर्थात, घी और दूध देने वाली, घी की उत्पत्ति का स्थान, अर्थात, घी को प्रकट करने वाली, घी की नदी तथा घी की भंवर रूप गौएँ मेरे घर में सदा निवास करें। गौ का घी मेरे हृदय में सदा स्थित रहे। घी मेरी नाभि में प्रतिष्ठित हो। घी मेरे सम्पूर्ण अंगों में व्याप्त रहे और घी मेरे मन में स्थित हो। गौएँ मेरे आगे रहें। गौएँ मेरे पीछे भी रहें। गौएँ मेरे चारों ओर रहें और मैं गौओं के बीच में निवास करूँ। महर्षि वशिष्ठ गोमाता को भूमि पर ईश्वर का साक्षात् रूप मान कर प्रणाम करते हैं—

यया सर्वमिदं व्याप्तं जगत् स्थावरजङ्गमम्।
तां धेनुं शिरसा वन्दे भूतभव्यस्य मातरम्।।

(महाभारत अनुशासन पर्व अध्याय ८० श्लोक ३)

(अर्थात जिसने समस्त चराचर जगत् को व्याप्त कर रखा है, उस भूत और भविष्य की जननी गोमाता को मैं मस्तक झुका कर प्रणाम करता हूँ)।

महर्षि वशिष्ठ जी इक्ष्वाकुवंशी महाराजा सौदास से (भगवान राम के पूर्वज) "गवोपनिषद्" में गोमाता की महिमा को प्रकट करते हुए कहते हैं कि संसार में गौ से बढ़कर दूसरा कोई उत्कृष्ट प्राणी नहीं है। उससे श्रेष्ठ दूसरी कोई वस्तु नहीं है।

599 ई०पू० महावीर स्वामीजी के समय, अर्धमागधी प्राकृत भाषा में रचित जैन आगमों के अनुसार किसी के धन का आकलन गायों की संख्या से होता था। एक व्रज गोकुल = १०,००० गायें। महावीर जी के पिता राजा सिद्धार्थ के वैशाली गणराज्य में सर्वाधिक गायों के १० स्वामियों को 'राजगृह महाशतक' एवं 'काशियचुलनिपिता' कहा जाता था। महावीर जी ने अपने अनुयायियों को ६०,००० गायों के पालन का आदेश दिया था। आज भी जैन मुनि नंगे पैर सम्पूर्ण देश में भ्रमण कर समाज को शाकाहार और गौ पालन का संदेश देते आ रहे हैं।

प्राचीन काल से ही संतों, महात्माओं, मुनियों ने और वेद—पुराणों, शास्त्रों और भिन्न—भिन्न भाषाओं में लिखे ग्रंथों में गोमाता के गुणों की महिमा का बखान किया है, जो मानव जाति को सदैव संदेश रूप में यही शिक्षा प्रदान करते हैं कि अहिंसा, प्रेम, सद्भाव और निस्वार्थ सेवा ही उत्कृष्ट गुण हैं, जो हर समस्या का समाधान हैं, स्वयं और समाज के उत्थान का मूल कारण हैं। अहिंसात्मक विचारों के साथ प्रेम भाव से गोमाता की निस्वार्थ सेवा, व्यक्ति को भी दैवीय गुणों से सम्पन्न होने का आशीर्वाद प्रदान करती है।

एक अनुभव

वैद्य नंदिनी भोजराज (एम.डी., आयुर्वेद)

पंचगव्य और इन्द्रलुप्त-चाई

समाज में कभी–कभी हम ऐसे लोगों से मिलते हैं जिनके बाल बीच–बीच से निकल गए हैं। सिर पर गोल–गोल जगह बनती है, जहाँ के बाल झड़ चुके हैं। यह एक कीटाणू, जो अपनी आँख से नहीं दिखता जिसके कारण होता है। अगर हम इसे पूर्णरूप से खत्म करें तो यह इस कीटाणू का संपूर्ण नाश हो सकता है, जिसकी पुनः उत्पत्ति नहीं होगी। उसके लिए विशेष चिकित्सकीय योजना की आवश्यकता होती है। यह स्पर्श से संक्रामक हो सकता है। अतः ऐसे व्यक्ति के कपड़ों का उपयोग दूसरे किसी व्यक्ति को नहीं करना चाहिए। या फिर उपयोग किए गए कपड़े को गरम पानी एवम् साबुन से ठीक प्रकार से धोकर धूप में सुखाना चाहिए और प्रेस करना चाहिए।

गोमूत्र को कृमिनाशक, विषघ्न बताया गया है। गोविज्ञान अनुसंधान केन्द्र, देवलापार में कामधेनु एन्टीडॅन्ड्रफ लोशन बनाया जाता है। इसमें रीठा, शिकाकाई, कपूर, अजवायन सत् आदि औषधियाँ डाली जाती हैं। शुरूवात के दिनों में कामधेनु एन्टीडॅन्ड्रफ लोशन में थोड़ा पानी डालकर पतलाकर उतनी ही जगह में जहाँ के बाल गिरे हैं, लगाएं। पाँच–सात मिनट लगाकर रखें। तदुपरान्त कुनकुने पानी से साफ कर लेवें। कामधेनु एन्टीडॅन्ड्रफ लोशन लगाना शुरू करने के आठ दिन उपरान्त कामधेनु केश तैल थोड़ा कुनकुना करके जहाँ के बाल निकले हैं वहाँ लगाकर मालिश करें। शाम को घर लौटने के पश्चात साफ कपास या

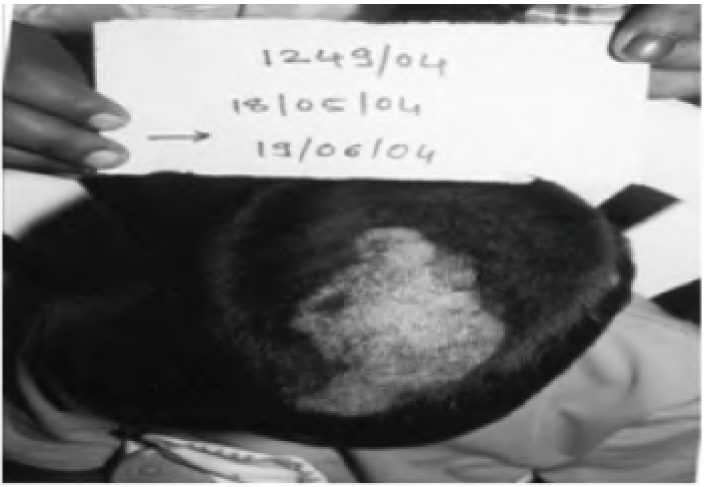

कपड़े से कामधेनु गोमूत्र अर्क को लगाएं। कम से कम दस मिनट लगाए रखें। तदुपरान्त कामधेनु श्वित्रनाशक लेप की छोटी टिकिया कामधेनु गोमूत्र अर्क में घिसकर या उसके साथ लेप तैयार कर लगाएं। पंद्रह–बीस मिनट लेप को रखकर साफ करें। यह निश्चित ही ठीक हो सकता है। उचित मार्गदर्शन के लिए कामधेनु पंचगव्य आयुर्वेद चिकित्सा केन्द्र, महल, देवलापार या शिवाजीनगर से संपर्क करें।

सरदारी लाल शारदा

गोमूत्र के विशेष गुण जो आप नहीं जानते !

गाय के गोबर में लक्ष्मी और मूत्र में गंगा का वास होता है, जबकि आयुर्वेद में गोमूत्र के ढेरों प्रयोग बतलाए गए हैं। गोमूत्र का रासायनिक विश्लेषण करने पर वैज्ञानिकों ने पाया, कि इसमें 24 ऐसे तत्व हैं जो शरीर के विभिन्न रोगों को ठीक करने की क्षमता रखते हैं। आयुर्वेद के अनुसार गोमूत्र का नियमित सेवन करने से कई बीमारियों को खत्म किया जा सकता है। जो लोग नियमित रूप से थोड़े से गोमूत्र का भी सेवन करते हैं, उनकी रोगप्रतिरोधी क्षमता बढ़ जाती है। मौसम परिवर्तन के समय होने वाली कई बीमारियां दूर ही रहती हैं। शरीर स्वस्थ और ऊर्जावान बना रहता है। इसके कुछ गुण इस प्रकार हैं –

1. गोमूत्र कड़क, कसैला, तीक्ष्ण और ऊष्ण होने के साथ–साथ विष नाशक, जीवाणु नाशक, त्रिदोष नाशक, मेधा शक्ति वर्द्धक और शीघ्र पचने वाला होता है। इसमें नाइट्रोजन, ताम्र, फास्फेट, यूरिया, यूरिक एसिड, पोटेशियम, सल्फेट, फास्फेट, क्लोराइड और सोडियम पाया जाता है। यह शरीर में ताम्र की कमी को पूरा करने में भी सहायक है।

2. गोमूत्र को न केवल रक्त के सभी तरह के विकारों को दूर करने वाला वल्कि कफ, वात व पित्त संबंधी तीनों दोषों का नाशक, हृदय रोगों व विष प्रभाव को खत्म करने वाला, बल–बुद्धि देने वाला बताया गया है। साथ ही यह आयु भी बढ़ाता है।

3. पेट की बीमारियों के लिए गोमूत्र रामवाण की तरह काम करता है। इसे चिकित्सकीय सलाह के अनुसार नियमित पीने से यकृत यानी लीवर के बढ़ने की स्थिति में लाभ मिलता है। यह लीवर को ठीक कर खून को साफ करता है और रोग से लड़ने की क्षमता विकसित करता है।

4. 20 मि.ली. गोमूत्र प्रातः– सायं पीने से निम्न रोगों में लाभ होता है

— 1. भूख की कमी, 2. अजीर्ण, 3. हार्निया, 4. मिर्गी, 5. चक्कर आना, 6. बवासीर, 7. प्रमेह, 8.मधुमेह, 9.कब्ज, 10. उदररोग, 11. गैस, 12. लू लगना, 13.पीलिया, 14. खुजली, 15. मुखरोग, 16.ब्लडप्रेशर, 17. कुष्ठ रोग, 18. ज्वाइंडिस, 19. भगन्दर, 20. दन्तरोग, 21. नेत्र रोग, 22. धातु क्षीणता, 23. जुकाम, 24. बुखार, 25. त्वचा रोग, 26. घाव, 27. सिरदर्द, 28. दमा, 29. स्त्रीरोग, 30. स्तनरोग, 31. अनिद्रा।

5. गोमूत्र को मेध्या और हृदया कहा गया है। इस तरह से यह दिमाग और हृदय को शक्ति प्रदान करता है। यह मानसिक कारणों से होने वाले आघात से हृदय की रक्षा करता है और इन अंगों को प्रभावित करने वाले रोगों से बचाता है।

6. इसमें कैंसर को रोकने वाली 'करक्यूमिन' पायी जाती है।

7. कैंसर की चिकित्सा में रेडियो एक्टिव एलिमेन्ट प्रयोग में लाए जाते हैं। गोमूत्र में विद्यमान सोडियम, पोटेशियम, मैग्नेशियम, फास्फोरस, सल्फर आदि में से कुछ लवण विघटित होकर रेडियो एलिमेन्ट की तरह कार्य करने लगते हैं और कैंसर की अनियन्त्रित वृद्धि पर तुरन्त नियंत्रण करते हैं। कैंसर कोशिकाओं को नष्ट करते हैं। अर्क ऑपरेशन के बाद बची कैंसर कोशिकाओं को भी नष्ट करता है। यानी गोमूत्र में कैंसर बीमारी को दूर करने की शक्ति समाहित है।

8. दूध देने वाली गाय के मूत्र में "लेक्टोज" की मात्रा अधिक पाई जाती है, जो हृदय और मस्तिष्क के विकारों के लिए उपयोगी होता है।

9. गाय के मूत्र में आयुर्वेद का खजाना है! इसके अन्दर 'कार्बोलिक एसिड' होता है जो कीटाणु नाशक है, यह कीटाणु जनित रोगों का भी नाश करता है। गोमूत्र चाहे जितने दिनों तक रखें, ख़राब नहीं होता है।

10. जोड़ों के दर्द में दर्द वाले स्थान पर गोमूत्र से सिकाई करने से आराम मिलता है। सर्दियों के मौसम में इस परेशानी में सोंठ के साथ गोमूत्र पीना फायदेमंद बताया गया है।

11. गैस की शिकायत में प्रातःकाल आधे कप पानी में गोमूत्र के साथ नमक और नींबू का रस मिलाकर पीना चाहिए।

12. चर्म रोग में गोमूत्र और पीसे हुए जीरे के लेप से लाभ मिलता है। खाज, खुजली में गोमूत्र उपयोगी है।

13. गोमूत्र मोटापा कम करने में भी सहायक है। एक ग्लास ताजे पानी में चार बूंद गोमूत्र के साथ दो चम्मच शहद और एक चम्मच नींबू का रस मिलाकर नियमित पीने से लाभ मिलता है।

14. गोमूत्र का सेवन छानकर किया जाना चाहिए। यह वैसा रसायन है, जो वृद्धावस्था को रोकता है और शरीर को स्वस्थ बनाए रखता है।

15. गोमूत्र किसी भी प्रकृतिक औषधी के साथ मिलकर उसके गुण–धर्म को बीस गुणा बढ़ा देता है। गोमूत्र का कई खाद्य पदार्थों के साथ अच्छा संबंध है, जैसे गोमूत्र के साथ गुड़, गोमूत्र शहद के साथ आदि।

16. अमेरिका में हुए एक अनुसंधान से सिद्ध हो गया है कि गोमाता के पेट में 'विटामिन बी' सदा ही रहता है। यह सतोगुणी रस है व विचारों में सात्विकता लाता है।

17. गोमूत्र लेने का श्रेष्ठ समय प्रातःकाल का होता है और इसे पेट साफ करने के बाद खाली पेट लेना चाहिए। गोमूत्र सेवन के 1 घंटे पश्चात ही भोजन करना चाहिए।

18. गोमूत्र देशी गाय का ही सेवन करना सही रहता है। गाय गर्भवती या रोग ग्रस्त नहीं होना चाहिए। एक वर्ष से बड़ी बछिया का गोमूत्र बहुत लाभकारी होता है।

19. मांसाहारी व्यक्ति को गोमूत्र नहीं लेना चाहिए। गोमूत्र लेने के 15 दिन पहले मांसाहार का त्याग कर देना चाहिए। पित्त प्रकृति वाले व्यक्ति को सीधे गोमूत्र नहीं लेना चाहिए, गोमूत्र को पानी में मिलाकर लेना चाहिए। पीलिया के रोगी को

गोमूत्र नहीं लेना चाहिए। देर रात्रि में गोमूत्र नहीं लेना चाहिए। ग्रीष्म ऋतु में गोमूत्र कम मात्रा में लेना चाहिए।

20. घर में गोमूत्र छिड़कने से लक्ष्मी जी की कृपा मिलती है। जिस घर में प्रतिदिन गोमूत्र का छिड़काव किया जाता है, वहां देवी लक्ष्मी की विशेष कृपा बरसती है।

21. गोमूत्र में गंगा मैया वास करती हैं। गंगा को सभी पापों का हरण करने वाली माना गया है, अतः गोमूत्र पीने से पापों का नाश होता है।

22. जिस घर में नियमित रूप से गोमूत्र का छिड़काव होता है, वहां बहुत सारे वास्तु दोषों का समाधान एक साथ हो जाता है।

23. देसी गाय के गोबर–मूत्र–मिश्रण से 'प्रोपिलीन ऑक्साइड" उत्पन्न होती है, जो बारिस लाने में सहायक होती है। इसी के मिश्रण से 'इथिलीन ऑक्साइड' गैस निकलती है जो ऑपरेशन थियेटर में काम आती है।

24. गोमूत्र कीटनाशक के रूप में भी उपयोगी है। देसी गाय के एक लीटर गोमूत्र को आठ लीटर पानी में मिलाकर प्रयोग किया जाता है। गोमूत्र के माध्यम से फसल को नैसर्गिक यूरिया मिलता है। इस कारण खाद के रूप में भी यह छिड़काव उपयोगी होता है। गोमूत्र से औषधियाँ एवं कीट नियंत्रक बनाया जा सकता है।

25. अमेरिका ने गोमूत्र पर 6 पेटेंट ले लिए हैं, और अमेरिकी सरकार हर साल भारत से गाय का मूत्र आयात करती है और उससे कैंसर की दवा बनाती है। उसको इसका महत्व समझ आने लगा है, जबकि हमारे शास्त्रो में करोड़ों वर्षों पहले से इसका महत्व बताया गया है।

सफलता की शुरुआत, AICT के साथ

9359500756,
9548426988

Looking For The Best
COMPUTER
COURSE
join us courses and achieve
learning dream

- DOAP
- DCAA
- DCA
- O' LEVEL
- ADCA
- CCC
- CCOAI
- Python
- Java
- Tally Prime

REGISTER NOW

AICT Computer Education
Near Laxmibai Girls Inter College, Kamla Nagar, Etah

हरीशंकर दीक्षित 'पथिक'

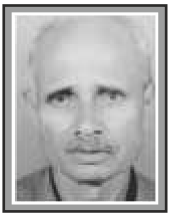

गोभक्त और पूर्व 'राष्ट्रधर्म' संपादक आनन्द प्रकाश मिश्र 'अभय' जी का गोलोकवास

हिन्दी भाषा–साहित्य के समर्पित सेवक, मनस्वी विचारक, निर्भीक लेखक, यशस्वी सम्पादक और ऋषिवत जीवन जीने वाले कर्मठ कर्मयोगी देशभक्त आदरणीय गुरुवर आनन्द प्रकाश मिश्र 'अभय' जी अपने जीवन के महत्वपूर्ण स्वप्न (रामजन्मभूमि पर भव्य मन्दिर निर्माण) को साकार होते हुए देखने के पश्चात तिरान्वे वर्ष की आयु में नश्वर शरीर को त्यागकर गोलोकवासी हो गये। राष्ट्रधर्म परिवार और समस्त इष्ट–मित्रों सहित सुधी पाठक जन इस दुखद समाचार से भावविह्वल हो दुखी हैं।

अभय जी का जन्म चार दिसम्बर उन्नीस सौ इकतीस को हरदोई जनपद की शाहाबाद तहसीलान्तर्गत ग्राम व पोस्ट– **सजहनपुर** में सुसंस्कृत परिवार में हुआ था। इनके पिता पण्डित रामनारायण जी मिश्र मिडिल स्कूल में अध्यापक थे। वे अनेक ग्रन्थों का गहनता से अध्ययन करने वाले स्वाध्यायी प्रकृति के व्यक्ति थे। ऐसे पिता के घर जन्मे अभय जी को सुसंस्कारों के साथ स्वाध्याय की प्रेरणा मिलना स्वाभाविक ही थी; अतः पढ़ायी के साथ अनेक सांस्कृतिक, धार्मिक तथा पौराणिक ग्रन्थों का अध्ययन करने की रुचि इनमें स्वतः उत्पन्न हुई। इस प्रकार शिक्षा के साथ स्वाध्याय की प्रवृत्ति ने इनके ज्ञान में भारी वृद्धि करते हुए इन्हें अनेक विषयों का ज्ञाता बना दिया। इतिहास– भूगोल इनका प्रिय विषय था। देश के सैकड़ों वर्षों की दासता के इतिहास का अध्ययन कर उसके कारणों को भली–भाँति जानकर उन्हें दूर करने की सामर्थ्य इन्हें राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में दिखायी दी और ये इस संगठन से जुड़कर लेखन के माध्यम से लोगों को जागरूक करने का प्रयास करने लगे। इनके बड़े भाई श्री माया प्रकाश मिश्र का सहयोग भी इन्हें भलीभाँति मिलता रहा।

अभय जी की प्रारम्भिक शिक्षा गाँव के स्कूल में हुई, तत्पश्चात् क्षत्रिय इण्टर कालेज, हरदोई से इण्टर करके दयानन्द ऐंग्लो वैदिक डिग्री कालेज, कानपुर में स्नातक हेतु प्रवेश लिया, किन्तु शिक्षा के मध्यवर्तीकाल में ही उ.प्र. के प्रशासनिक विभाग में नायब तहसीलदार के पद पर सेवा का अवसर मिलने के कारण स्नातक की शिक्षा बीच में ही रोककर नायब तहसीलदार के पद पर प्रतिष्ठित होकर देश की सेवा करने लगे।

सरकारी सेवा करते हुए ही इन्होंने स्नातक की शिक्षा कान्यकुब्ज डिग्री कालेज, लखनऊ से पूर्ण की। इनका विवाह बाराबंकी के प्रसिद्ध समाजसेवी सत्यप्रेमी जी की सुपुत्री के साथ सम्पन्न हुआ जो अत्यन्त सुशील मिलनसार और सुमधुर भाषिणी होने के साथ ही दीन–हीनों पर कृपादृष्टि रखने वाली थीं। अभय जी के अपने परिवार में वृद्धि होने के कारण सन्तानों की शिक्षा और समुचित देखभाल हेतु बाराबंकी में घर बनाना पड़ा। इस प्रकार इनकी कन्या तथा पुत्रों की शिक्षा–दीक्षा

बाराबंकी में सामान्य रूप से होने लगी इनकी समस्त सन्तानें सरकारी स्कूल कालेजों में ही पढ़ीं। इनके बड़े पुत्र श्री मनोज कुमार मिश्र कमिश्नर तथा मँझले पुत्र हेरम्ब मिश्र विशेष सचिव उत्तर प्रदेश सरकार के पद से सेवानिवृत्त हो चुके हैं। दो पुत्र अपना स्वतन्त्र व्यवसाय कर रहे हैं और कन्या भी प्रतिष्ठित परिवार में अपने पिता की प्रतिष्ठता बढ़ाती हुई अपने परिवार की उन्नति में सहयोग करती रही हैं।

आदरणीय गुरुवर अभय जी से मेरा प्रथम परिचय साहित्य साधना संस्था की कवि गोष्ठी में हुआ था। गोष्ठी में मेरी प्रथम रचना ***''जागो वीर जवानो अब मैं तुम्हें जगाने आया हूँ, मातृभूमि के गौरव का इतिहास बताने आया हूँ।''*** सुनकर अभय जी मुझ पर अति प्रसन्न हुए और मुझे अपने घर पर आमंत्रित करते हुए बोले; कल अपनी यह रचना लिखकर लाना। दूसरे दिन प्रातः ही मैं अभय जी के घर पहुँच गया। गुरु जी ने मेरी कविता में दो स्थान पर गति भंग दोष इंगित कर उन्हें दूर करने को कहा। चाय पीने के पश्चात् मैंने दो प्रयासों में उन्हें सुधारा तो गुरू जी अति प्रसन्न हुए और मुझे आशीर्वाद दिया। इस प्रकार अभय जी से मेरा गुरु–शिष्य का पावन सम्बन्ध स्थापित हो गया।

राष्ट्र–धर्म के लिए पूर्णरूपेण समर्पित अभय जी ऐसी विलक्षण प्रतिभा के धनी थे जो प्रायः ऋषिवत जीवन आचारी व्यक्ति में ही हो सकती है। प्रतिपल प्रकृति के अनुशासन में जीना, आज के समय अति कठिन है। प्रकृति हमारी माता है, गो इसकी सहायक सहचरी है, धरती प्राणियों के जीवन का आधार है, प्रकृति की शक्ति पर्यावरण है, पंचमहाभूत पर्यावरण के अंग हैं और प्रकृति पर्यावरणीय शक्ति द्वारा ही सृष्टि को गतिशील बनाये रखने की ईश्वरी इच्छा का पालन करती है आदि सत्य तथ्यों का ज्ञान मुझे गुरुवर अभय जी से ही मिला है। लेख लिखने की प्रेरणा मुझे गुरुदक्षिणा चुकाने की आज्ञा के रूप में देकर अभय जी ने मुझे गद्य लेखन में प्रोत्साहित किया। शिष्य पर गुरु का ऐसा प्रगाढ़ स्नेह विरले ही देखने को मिलेगा। दक्षिणा में शिष्य की प्रतिभा वृद्धि माँगने वाले अभय जी का कहना रहा है कि वही गुरु धन्य होता है जिसका शिष्य उससे अधिक प्रतिभा सम्पन्न हो जाता है। अभय जी आजीवन मितव्ययी रहे हैं, उनका कहना था कि हमारे धर्मग्रन्थ हमें प्रकृति का उतना ही दोहन करने का उपदेश देते हैं जितने में मनुष्य की आवश्यक आवश्यकताओं की पूर्ति हो जाये। इससे अधिक उपभोग करने वाला मनुष्य अन्यों के भाग का अपहर्ता होने के कारण चोर कहा जाना चाहिए।

आदरणीय अभय जी आजीवन उपरोक्त उपदेश के अनुरूप जीवनयापन करते रहे। अनुचित उपभोग, वैभव–विलास से वे सदा वाँछित दूरी बनाये रखते थे। वर्षों तक देशहित में **राष्ट्रधर्म** की अवैतनिक सेवा इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है। अन्तिम कुछ वर्ष शिथिल–असक्त शरीर के कारण आने जाने का व्यय लेना उनकी विवशता थी। एक बात और यह कि अभय जी गोवंश के दुःख से अतीव दुखी रहते थे। उन्होंने गोवंश की व्यथा पर अनेक लेख भी लिखे जो **गोसम्पदा** मासिक पत्रिका में प्रकाशित होते रहते थे। इन्होंने मुझे भी गोवंश की वर्तमान दुर्दशा पर लिखने हेतु प्रेरित किया। उनके आशीर्वाद स्वरूप ही मैं गोवंश की दुर्दशा पर लेख लिखकर सरकार तक को उत्तरदायी मानते हुए निर्भयता से लिखता हुआ इसे दूर करने का एकमात्र उपाय गोशक्ति सम्पदा का समुचित उपयोग बताता रहता हूँ।

ऐसे निःस्वार्थ भाव से देश की सेवा करने वाले थे हमारे परम आदरणीय अभय जी जिनके अनेक शिष्य आज प्रखरता से देशहित में लिखने में संकोच नहीं करते। अभय जी की देश, समाज और राष्ट्र सेवा का सम्मान संघ विरोधी सरकारों तथा संगठनों ने कभी नहीं किया; यद्यपि वे अभय जी के लेख तथा राष्ट्रधर्म में उनका सम्पादकीय अवश्य पढ़ते थे फिर भी अनेक सामाजिक–राष्ट्रवादी संगठन इनका सम्मान प्रायः करते ही रहते थे। अनेक बार सम्मानित होने वाले अभय जी को **गणेश शंकर विद्यार्थी राष्ट्रीय पत्रकारिता सम्मान 2010,** सारस्वर सम्मान अखिल भारतीय साहित्य परिषद लखनऊ, ब्रह्मावर्तालंकार अखिल भारतीय साहित्य परिषद लखनऊ, सम्मान राज्यपाल उ.प्र. और डॉ. लोहिया साहित्य सम्मान उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा सम्मानित – पुरुस्कृत किया जा चुका है। हमें ऐसे विद्वान राष्ट्रधर्म सेवक–उपदेशक गुरु के शिष्य होने पर गर्व है।

गोरक्षा विभाग, विश्व हिन्दू परिषद की उनकी दिवंगत आत्मा के प्रति हार्दिक श्रद्धांजलि।

– संपादक

प. पू. श्री. स्वामी शरणानन्दजी महाराज

गाय है हमारी माँ

देवी लक्ष्मी के मातृत्व से सृष्टि का पोषण होता है। प्रकृति के कण कण में उनका ही मातृत्व है। प्रत्यक्ष में माताएं देवी लक्ष्मी की प्रतिनिधि हैं। नारी के लिए मातृत्व सब कुछ है। मातृत्व पा लेने के बाद नारी को कुछ भी पाना शेष नहीं रह जाता है। शरीर के सम्बन्धों में माँ का स्थान सबसे ऊंचा है। माँ के ऊंचे पदनाम से गाय को जाना जाता है। प्राणी होकर भी गाय में मातृत्व की पोषण शक्ति है। नारी अपनी सन्तान से माँ बनती है, परंतु गाय अपनी सन्तान के कारण नहीं, अपितु पोषक तत्व के कारण सम्पूर्ण मानव जाति की माँ है– **''गावो विश्वस्य मातरः।''** गाय सर्वव्यापी, सारे विश्व की माँ है। दूध के सेवन करने वाले की वह माँ है। गोबर और गोमूत्र से मानव को होने वाले लाभ के कारण **''गोमये वसते लक्ष्मी, गोमूत्रे सर्व मङ्गला ''** ऐसा अपने शास्त्रो में कहा गया है।

प्राणियों में गाय मनुष्यों के सबसे निकट है। गाय से हटकर मानव जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकते हैं। गाय के दूध में सम्पूर्ण पोषक तत्व रोग निरोधक हैं। मानव रक्षक गो माँ को कुछ लोग मार कर खा जाते हैं। यह घोर पाप और अक्षम्य अपराध है। अधिक दूध के लिये कुछ लोग गाय को दवा की सुई लगा देते हैं, गाय पीड़ा से सिहर जाती है। पीड़ित गाय का दूध पीड़ा ही देगा। अंतः लोभ में गाय को पीड़ित न करें। माता रुप गाय से व्यापार की इच्छा अनैतिक है।

मनुष्यों के लिए गाय भगवान का दिया अनुपम उपहार है। भगवान की श्रेष्ठ कृति को हमने माँ कहा और इसे मूल स्वरुप में अनादिकाल से स्वीकार करते आ रहे हैं। शास्त्रों में यह भी उल्लेख है कि गाय के शरीर में सभी देवी–देवताओं का निवास है **''सर्वे देवा गवामङ्गे तीर्थानि तत्पदेषुच।''** अत्यंत दुःख की बात है कि आज के तथाकथित पढ़े लिखे लोग गाय को वर्णसंकर बना रहे हैं। मेरा सुझाव है व आग्रह है कि गोमाता को मूल स्वरुप में ही स्वीकार करें। गाय का मूल स्वरुप (प्राकृतिक) और सनातन संस्कृति से छेड़छाड़ निश्चित ही मानव जाति के लिए अहितकार होगी। गाय सदा वंदनीय तथा रक्षणीय है।

निवृत्त शंकराचार्य स्वामी श्रीनिरजंनदेवतीर्थजी

गोसेवा ही सच्ची राष्ट्र- सेवा

भारतीय संस्कृति की सच्ची रीढ़ गो–संस्कृति ही है। स्वतन्त्रता प्राप्ति का मुख्य उद्देश्य भारतीय संस्कृति की सारसर्वस्व प्राणभूता– गोमाता की आराधना ही थी। पर स्वतन्त्रता प्राप्त होते ही राजनीतिके नाम पर धर्म और संस्कृति के सर्वथा विरुद्ध नेताओं के मन में कोई एक पाश्चात्त्य अनुकृतिरुपा पिशाचिनी प्रविष्ट हो गयी, जिसका प्रत्यक्ष प्रचण्ड नग्न ताण्डव आज सर्वत्र दृष्टिगोचर हो रहा है। बस केवल लूट–पाट, डाका, हत्या तथा महान् अनर्थ की विभीषिका सर्वत्र व्याप्त है। सुख, शान्ति, सद्भावना, परस्पर प्रेम का व्यवहार इस राजनीति के द्वारा सर्वथा लुप्त कर दिया गया। आज सदाचार, सद्विचार, भगवद्भक्ति, ज्ञान, वैराग्य, सत्संग का प्रायः सर्वथा लोप–सा हो रहा है और विश्व के नित्य सच्चे स्वामी भगवान पर से श्रद्धा, विश्वास, आस्था उठ चुकी है। यहाँ तक कि संत, महात्मा, भक्त और धर्मात्माओं की महान उपेक्षा एवं कभी–कभी हत्या भी कर दी जाती है। भारत में बृहस्पति, शुक्र, कौटिल्य, सोमदेव, चंडेश्वर आदि के अनेक धर्म एवं ईश्वर–सापेक्ष श्रेष्ठ प्राचीन राजनीतिक ग्रन्थ आज भी विद्यमान हैं। रामायण, महाभारत, मनुस्मृति तथा विष्णुधर्मोत्तर आदि पुराणों में राजनीति और कला–विज्ञान आदि का भंडार भरा पड़ा है, जिनके सामने विश्व का सारा नवीन ज्ञान–विज्ञान कौड़ी–मूल्य का भी नहीं है। पर देश का दुर्भाग्य है कि देश के कर्णधारों ने उन पर किये गये शोधपूर्ण पाश्चात्त्यों के ग्रन्थों पर भी दृष्टिपात नहीं किया। रामचरितमानस – जैसे विश्व के सर्वोत्कृष्ट ग्रन्थ से भी वे पूर्ण रूप से परिचित नहीं हैं। अब सोचिये कि ऐसे लोग क्या कर सकते हैं, जो कर सकते हैं, वही कर रहे हैं। इन्हें गोमाता का ध्यान कहाँ से होगा?

गोमाता विशुद्ध सत्त्वमयी भगवती पृथ्वी की प्रतिमूर्ति है, समग्र धर्म, यज्ञ, सत्कर्म और विश्व संचालन का आधार है और सूंधेपन तथा वात्सल्य की तो सीमा ही है। इसके दर्शन, स्पर्श, वन्दन, अभिनन्दन आदि

से सारे पाप–ताप का शमन होकर परम कल्याण एवं सुख शान्ति, आनन्द का संचार होता है तथा सब प्रकार के मगंलमय अभ्युदय का आगमन होता है, यह सबका हृदय जानता है। इसलिये यह निरन्तर पूजनीय, वन्दनीय एवं अभिनन्दनीय है। वेद से लेकर रामचरितमानस तक की प्रत्येक पंक्ति में इसी की ही सर्वाधिक महिमा भरी पड़ी है।

आजकल एक बात विशेष ध्यान देने की है। एक तो सामान्य जनता की गोपालन की प्रवृत्ति कम होती जा रही है तथा जो लोग गोपालन करते हैं वे भी स्वार्थवश दूध के लोभ में (विदेशी) जर्सी गाय को रखना चाहते हैं जो वास्तव में गाय ही नहीं है। इसका पालन गोसेवा नहीं है। गोबर, गोमूत्र और गायों का आवास स्वास्थ्यप्रद माना जाता है जो विदेशी गायों में नहीं है। गोमाता के जो लक्षण अपने शास्त्रों में बताये गये हैं वे लक्षण केवल भारत वर्ष की देशी गायों में ही उपलब्ध हैं। भारतीय गायों का विशिष्ट लक्षण है उनका गल कम्बल और पीठ का कुकुद्। इसलिये गोदान आदि में भी जर्सी गायों को देना धन का अपव्यय मात्र है। गोमाता की सेवा से जो भी आध्यात्मिक और आर्थिक लाभ है, वह देशी गौ की सेवा से ही है। आजकल दूध बढ़ाने के लिये देशी गायों का जर्सी आदि विदेशी साँड़ों से सम्पर्क कराया जाता है, जिसके परिणामस्वरूप देशी गायों की नस्लें ही समाप्त होती जा रही हैं।

हम तो यहाँ हिन्दू, मुसलमान, जैन, बौद्ध, ईसाई–सभी भाइयों से यही प्रार्थना करेंगे कि आपके सभी धर्मग्रन्थों में गोमाता का अपार आभार स्वीकार किया गया है। आप सभी लोग गोसेवक हैं। अतः ताजिया, दुर्गा पूजा तथा विभिन्न चुनावों आदि–जैसे उत्सवों में खर्च होने वाले तीन–चार दिनों के अंदर अरबों–खरबों रुपये में से कुछ या अधिक–से–अधिक कटौती कर प्रत्यक्ष संत स्वरूपा तथा दूध, घी आदि प्रदान करने वाली भारतीय गोमाता (फ्रिजियन आदि नहीं) की सेवा में लगायें। यह कोई कठिन बात नहीं होगी, प्रत्युत इससे आप अपना एवं दूसरों का लोक – परलोक सुधार लेंगे।

गौओं की उपेक्षा से आज पृथ्वी नरक बन गयी है। पर पूरा विश्वासं कीजिये इन देवता–देवियों और उत्सवों की जगह सच्ची महामहिमामयी देवी गोमाता की सेवा से साक्षात् स्वर्ग या गोलोक ही इस भूमण्डल पर उतर आयेगा। तथा सच्चे सुख, शान्ति, आनन्द और कल्याण की मधुमयी सुधा धारा निरन्तर प्रवाहित होने लगेगी। सब लोगों के विचार बदल जायेंगे। परस्पर सौहार्द का वातावरण उपस्थित होकर प्रतिक्षण दिव्य ज्ञान–विज्ञान एवं भक्तियोग आदि के चमत्कार पूर्ण प्रचार–प्रसार सर्वत्र दीखने लगेंगे।

सभी प्रकार की विद्याएँ, विशुद्ध बुद्धि एवं धर्म–पुण्य के सभी अगं प्रत्यगं प्रस्फुटित होने लगेंगे। **'वृषो हि भगवान् धर्मः'** जब साक्षात् धर्मरूप वृषभ चतुष्पाद से सम्पन्न होकर पृथ्वी पर विचरण करेगा तब पूर्ण सत्ययुग आ जायगा एवं सभी जितेन्द्रिय होकर भक्त, संत, धर्मात्मा, महात्मा एवं विद्वान बन जायेंगे। किसी को किसी वस्तु का स्वप्न में भी अभाव नहीं होगा। परिपूर्ण परमानन्द की व्याप्ति एवं प्राप्ति होने लगेगी। इससे अधिक क्या चाहिये। सर्वत्र कृतार्थता और कृतकृत्यता ही दिखेगी। सभी से करबद्ध प्रार्थना है कि आप हमारी इस अभ्यर्थना को स्वीकार करें।

धर्म नारायण शर्मा (वरिष्ठ प्रचारक)

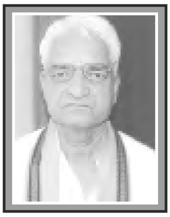

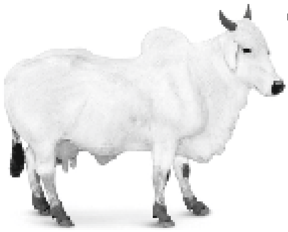

राज्य कर्मचारी उदासीनता छोड़ गोसंरक्षण करें

अपने देश का संविधान भारत के सभी मानबिन्दुओं की रक्षा नहीं करता। जैसे– गोमाता। स्पष्टरूप से संविधान उसे राष्ट्रीय विषय नहीं मानता। राज्य सरकारों के भरोसों पर गोमाता को छोड़ दिया गया है। कुछ राज्यों ने गोरक्षा के कानून बनाये हैं, वे राज्य व वहां के राज्यकर्मचारी उदास भाव से ही गोरक्षा का कार्य करते हैं। हजारों गोवंश ऐसे राज्यों से जा रहा है, परन्तु सम्बन्धित विभाग के कर्मचारी उसे रोकने का कार्य नगण्य ही करते हैं। इसे क्या कहें, क्या कर्मचारियों को धन मिल गया है या वे कर्तव्य के प्रति सजग व तत्पर नहीं हैं।

राज्य के ऐसे कर्मचारी तभी सक्रिय होते हैं जब कहीं हिन्दू समाज के जवानों ने गायों को रोका, या ट्रक को रोककर गायों को ले जाने वालों को रोका। रोकने के कारण झगड़ा हुआ तब राज्य की पुलिस सक्रिय होकर कार्यवाही करती है। गोवंश तस्कर ऐसे मौके पर साप्ताहिक बाजार में ले जाने का बहाना बनाकर और आवश्यक धन खर्च करके गायों को छुड़ा लेते हैं और उन्हें बंगलादेश पहुँचा देते हैं। भारत के कुछ राज्यों ने गोवंश रक्षा कानून नहीं बना रखा है। उन राज्यों में इतना–सा कानूनी प्रावधान है कि हमारे राज्य का पशु अवैध ढंग से अन्यत्र नहीं जाना चाहिए। इस विषय में भी ऐसे राज्य उदासीन हैं। इस कारण से बड़ी संख्या में गोधन जा रहा है।

अपने देश का संविधान भारत के सभी मानबिन्दुओं की रक्षा नहीं करता। जैसे– गोमाता। स्पष्टरूप से संविधान उसे राष्ट्रीय विषय नहीं मानता। राज्य सरकारों के भरोसों पर गोमाता को छोड़ दिया गया है। कुछ राज्यों ने गोरक्षा के कानून बनाये हैं, वे राज्य व वहां के राज्यकर्मचारी उदास भाव से ही गोरक्षा का कार्य करते हैं।

गोरक्षा करने हेतु गोशालाएँ भी चलती हैं। गोशालाओं के द्वारा गोरक्षा होती है। समाज ही गोशालाएँ चलाता है। कुछ राज्य भी इसमें सहयोग करते हैं। गोशालाएँ कुछ बहुत अच्छे ढंग से चलती हैं, उन गोशालाओं का गोधन दर्शनीय होता है। उन गोशालाओं में दवाएँ व खाद भी तैयार होती है। बावजूद

इसके कई गोशालाओं का हाल दयनीय है। समाज व सरकार का कार्य है ऐसी गोशालाओं को भी श्रेष्ठ बनाने हेतु अच्छा योगदान देवें। हिन्दू समाज व सन्त आदि सभी गोमाता की महिमा का गुणगान करते हैं फिर भी समाज उदासीन है। उदासीन ही नहीं वह अपना गोवंश भी बेच रहा है या उससे दूध लेकर उसे छोड़ देता है। हजारों गोवंश सड़कों पर घूमता रहता है। कभी–कभी दुर्घटना का शिकार होकर मृत्यु को प्राप्त होता है। इसलिए सभी राज्यकर्मचारियों के लिए कुछ नियम अवश्य बनें जिनसे गोवंश की आदरपूर्वक पालना होती रहे।

आज देश में घर–घर गोपालन हो तो गो से दूध व खाद पर्याप्त मात्रा में मिलने लगेगा। गोवंश द्वारा गोबर का खाद व उसके द्वारा फसल होने लगे तो कई प्रकार की बीमारियों का शमन हो सकता है। शहरों में बनने वाले बहु मंजिले भवनों के लिए भी सरकारी नियम बने कि हर घर को एक गाय रखनी होगी तथा उस भवन के परिसर में हर घर की गाय रह सके इतनी भूमि का प्रावधान करना होगा। यदि सत्ता–शासन भी गोरक्षा को प्राथमिकता दे तो यह सब संभव होने लगेगा।

भारत का आम हिन्दू शास्त्रीय दृष्टि से भी गोमाता की रक्षा–पूजा करेगा। शास्त्रों में गो के महत्व को दर्शाया गया है। भारत के जनमन को उसी पर अधिष्ठित करना होगा, यही भारत के कल्याण के लिए आवश्यक है।

शास्त्र क्या कह रहे हैं, इस पर दृष्टिपात करें –

''गायें अत्यन्त पवित्र एवं मंगलकारी हैं। गायों में सभी लोक प्रतिष्ठित हैं। गायों से (गव्य पदार्थों तथा गोबर आदि के बल पर उत्पन्न हविष्यान्न) से ही यज्ञ सम्पन्न होता है। गायें सभी प्रकार के पापों को दूर करने वाली हैं। **गोमूत्र–गोमय (गोबर), गोघृत, गोदुग्ध, गोदधि तथा गोरोचन 6 पदार्थ गोपडंग कहलाते हैं।** यह गोपडंग परम कल्याणकारी है। गायों के सींग का जल पुण्यप्रद है और सभी प्रकार के पापों को नष्ट करने वाला है। गायों को खुजलाना सभी प्रकार के दोषों–कलंकों को मिटा देने वाला है। गायों को ग्रास देने से स्वर्गलोक में प्रतिष्ठा होती है। गोमूत्र में गंगाजी का निवास है, इसी प्रकार गोधूलि में अभ्युदय का निवास है, गोमय में लक्ष्मी का निवास है और गायों को प्रणाम करने में सर्वोपरि धर्म का परिपालन हो जाता है, अतः उन्हें निरन्तर प्रणाम करते रहना चाहिए।''

––विष्णुसमृति

विजेन्द्र तंवर

गोरक्षा और हमारा राष्ट्रीय कर्तव्य

वैदिक संस्कृति में आर्यजाति ने प्राचीन काल से ही गाय को बड़ी प्रतिष्ठा दी है। वेदों में गोपालन, गोसेवा, प्राणिरक्षा के विषय में बहुत कुछ कहा गया है; क्योंकि गाय से गृहस्थी के कार्य में बड़ी सहायता मिलती है। गाय वास्तव में मानव–समाज का एक अत्यावश्यक अंग है। आज हमारे देश में पशुपालन, गोपालन आदि के सम्बंध में दयनीय स्थिति हो रही है। गोवंश पर आज भंयकर विपत्ति आई है। हम लोग क्रियात्मक रूप से कुछ भी नहीं कर रहे हैं। कर रहे हैं–एक मात्र गोदान, जिससे हमें गोमाता मृत्यु के पश्चात वैतरणी पार करा दे। हमारी कितनी स्वार्थपूर्ण भावना है।

कठोपनिषद में वाजश्र्वस ऋषि ने मोक्ष की अभिलाषा से अपना सर्वस्व गोवंश–धन आदि दान कर दिया था। ऋषि के पुत्र नचिकेता ने देखा कि उनके पिता बूढ़ी गायों को दान में दे रहे हैं। यह दान तो धर्म के स्थान में अधर्म है। दान लेने बालों को हानि के सिवा कुछ लाभ नहीं मिलने का। वह छोटा बालक अपने पिता को यज्ञ की दक्षिणा में बूढ़ी गाय देते हुए देखकर झुंझलाकर पिता से पूछता है–पिताजी! मुझे किसको दोगे? यहां बालक नचिकेता का संकेत है कि गाय दूध देती रही, तब तक तो उसका दूध पीते रहे; अब बूढ़ी होने पर जब दूध देने योग्य नहीं रही तब दान करने की सूझी है। बालक कहता है–*अन्नदा नाम ते लोकास्तान स गच्छति ता ददत।* अर्थात, जो ऐसी गायों का दान करता है, वह ऐसे लोकों को प्राप्त होता है जो आनन्द से शून्य हैं।

यजुर्वेद में कहा है–हमारी गौएँ माधवी हों–मधुमय होवें। ऋग्वेद में कहा गया है–**गाय हमारी माता, सांड़ हमारा पिता**–ये दोनों हमें स्वर्ग और ऐहिक सुख प्रदान करें। अथर्ववेद में और हमारे सब आर्षग्रन्थों में गोजाति की रक्षा का बड़ा महत्व है। गौ की पीठ में ब्रह्मा निवास करते हैं, गले में विष्णु, मुख में रुद्र, पेट में सब देवता और रोम–रोम में महाऋषि –गण। इतना महत्व हमारे धर्म शास्त्रों में गोवंश को दिया गया है।

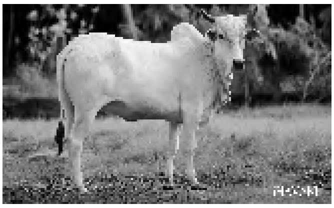

सज्जनो! गोवंश रक्षा की समस्या देश में अतिशय कठिन हो रही है। गोवंश का ह्रास अत्यधिक हो रहा है। हम लोगों को केवल धार्मिक ही नहीं, आर्थिक दृष्टि से भी उपयोगी समझ कर स्वयं अपने तथा जनता के कल्याणार्थ गोवंश की वृद्धि तथा उन्नति में हर कीमत पर सहायक होना चाहिए।

हमारी नित्य प्रार्थना में एक बात सर्वदा कही जाती है कि गौ और ब्राह्मणों का सदा–सर्वदा कल्याण हो। कितनी सुन्दर भावना है! पर इसको सुनकर एक सज्जन अप्रसन्न हो कर कहने लगे कि "गौ और ब्राह्मण का ही कल्याण क्यों हो? बकरी और अछूत का कल्याण क्यों न हो?" उनका कहना था कि स्वार्थी लोगों ने अपने हित के लिए इस श्लोक की रचना कर डाली है। उनको अंतिम चरण ***लोका समस्ता सुखिनो भवन्तु*** पर विचार न आया, जिसमें प्राणिमात्र के कल्याण के लिए प्रार्थना की गई है और वास्तव में देखा जाए तो जिस देश को शुद्ध–सात्विक दूध मिलेगा और जिस देश की बुद्धि शुद्ध–सात्विक होगी, उसका

सदा–सर्वदा कल्याण ही होगा। फलस्वरूप उस देश के रहने बाले गौ और ब्राह्मणों का सदा ही कल्याण मनाया करेंगे। जिसको शुद्ध गौ का दूध मिले और जिसकी बुद्धि शुद्ध हो उसको संसार में और क्या चाहिए?

आधुनिक समय में भारतीय समाज के सामने गोरक्षा का जो प्रश्न उपस्थित हुआ है, इसका बहुत कुछ श्रेय ऋषि दयानन्द सरस्वती जी को है, जिनके प्रबल प्रयत्न से देश में गौशालाएं स्थापित हुईं। उन्होंने धार्मिक दृष्टि से ही नहीं, आर्थिक दृष्टि से भी गोरक्षा का महत्व बतलाया है। **गोकरुणानिधि** ग्रन्थ लिख कर स्वामी जी महाराज ने भारतीय जनता पर बड़ा उपकार किया है। व्यावसायिक और आर्थिक दृष्टि से गोवंश हमारा सर्वश्रेष्ठ धन है। अग्नि होत्र के मंत्र में बार–बार ***वर्धय चासमान, प्रजया पशुभिः*** आया है, जिसमें पशुओं में बुद्धि की कामना की गई है। गोधन प्राचीन समय में एक विशेष सम्पत्ति समझा जाता था। क्या हम आज अपने गोधन की रक्षा कर रहे हैं? भारत कृषि प्रधान देश है। केवल किसानों का ही कर्तव्य नहीं है कि वे गोपालन, पशुपालन करें, प्रत्येक गृहस्थ का कर्तव्य है वह गोपालन को अपना नित्य कर्म समझे। कई देशों में आज वैज्ञानिक प्रयोगों एवम यन्त्रों से खेती का कार्य किया जाता है, किन्तु बिना गाय और बैलों के हमारा काम ही नहीं चल सकता। धार्मिक–आध्यात्मिक, आर्थिक–व्यावसायिक, पर्यावरणीय–स्वास्थ्य आदि सभी दृष्टियों से गोधन की रक्षा करना हमारा परम्कर्तव्य है। हम पर गोवंश का ऋण है। अर्थ की दृष्टि से दूध, दही, मट्ठा, घी, मक्खन आदि पदार्थ प्राप्त होते हैं। गोबर से कीमती खाद, गैस और बिजली बनाकर तथा कण्डे सहित अनेक उत्पाद निर्माण कर लाभ उठा सकते हैं और अनेक लोग लाभ उठा भी रहे हैं।

आज बड़े दुर्भाग्य की बात है कि हमें भारतीय नस्ल की गाय का दूध मिलना कठिन हो रहा है। मांसाहार का इतना प्रचार हो रहा है कि दूध की उत्पादन में बड़ी अड़चन उत्पन्न हो रही है। गोमाता –गोवंश पर इस समय बड़ा भारी संकट है। हिन्दू, मुस्लमान, ईसाई तथा संसार के और सभी मनुष्यों का गोमाता समान रूप से पोषण और कल्याण करती है। जहां गोपालन होता है, गोसेवा होती है, वहां सभ्यता का विकास होता है, पृथ्वी शस्यश्यामला–हरि भरी और उपजाऊ होती है, घर समृद्ध और सम्पन्न होते हैं तथा किसान कर्ज मुक्त रहते हैं। गाय मानवीय जगत के लिए ईश्वर की अनुपम देन है। आयुर्वेद–चिकित्सा में गाय के दूध को स्वास्थ्य के लिए परम हितकर बतलाया गया है। अमेरिका के प्रसिद्ध बर्ना मैकफैडन ने **दूध का चमत्कार** नाम की पुस्तक लिखी है। दुग्ध चिकित्सा अर्थात गाय का दूध पीने से अस्थि–क्षय, पाण्डुरोग, रक्ताल्पता, क्षय एवम अन्य कई प्रकार के रोग दूर किए जाते हैं।

हमारे प्रायश्चित–विधान में पंचगव्य सेवन का बड़ा माहात्म्य बताया गया है। इसका सेवन करने से हमारे दूषित विकार सब नष्ट हो जाते हैं। गाय के गोबर को सारे शरीर पर मल कर धूप में बैठने से खाज, खुजली आदि त्वचा रोग नष्ट हो जाते हैं। इसी प्रकार गोमूत्र विधिवत सेवन करने से शरीर की बढ़ी हुई उष्णता और उदर के कृमि नष्ट हो जाते हैं, यकृत एवं प्लीहा की वृद्धि दूर हो जाती है और वे अवयव चैतन्य हो जाते हैं। हिस्टीरिया आदि ज्ञानतन्तुयों के रोग दूर हो जाते हैं। न्यूरिस्थनीय, मज्जात–तन्तु दोष, चितभरम तथा वायु सम्बधी विकारों का शमन हो जाता है।

सज्जनो! गोवंश रक्षा की समस्या देश में अतिशय कठिन हो रही है। गोवंश का ह्रास अत्यधिक हो रहा है। हम लोगों को केवल धार्मिक ही नहीं, आर्थिक दृष्टि से भी उपयोगी समझ कर स्वयं अपने तथा जनता के कल्याणार्थ गोवंश की वृद्धि तथा उन्नति में हर कीमत पर सहायक होना चाहिए।

Sanjay Raman "Vidyavachaspati"

UNVEILING THE UNIQUENESS OF INDIGENOUS COWS A SMALL SCIENTIFIC RESEARCH STUDY

Abstract : Indigenous bovines have been an intrinsic constituent of agrarian societies for centuries, furnishing sustenance and engendering socio-economic repercussions within rural communities. Despite the ascension of contemporary agricultural methodologies and the dominance of commercial breeds, indigenous bovines continue to occupy an extraordinary niche due to their unparalleled attributes and contributions. This diminutive scientific research study endeavors to illuminate the distinctive characteristics and advantages of indigenous bovines through a comprehensive scrutiny of their genetic diversity, adaptability, milk composition and ecological significance.

Introduction : Indigenous bovines are colloquially referred to as autochthonous or locale breeds pertaining to cattle that have undergone progressive evolution within defined geographic domains. They have inevitably adapted to indigenous climatic conditions, the available forage resources and cultural practices etc. Nevertheless, the paramount significance of these indigenous bovines just frequently remains obscured amidst the wide-ranging endorsement of ostensible i.e., high-yielding commercial breeds. This study seeks to underscore the idiosyncratic attributes of indigenous bovines, which render them invaluable in terms of genetic diversity, adaptability, milk composition and their ecological role within sustainable farming systems.

Genetic Diversity : One of the cardinal merits of indigenous bovines resides in their copious genetic diversity. Over the course of time, indigenous cattle populations have engendered unique traits that endow them

with resilience against local adversities including diseases, parasites and extreme climatic vicissitudes. Genetic analyses employing DNA markers have revealed conspicuous genetic clusters within distinct indigenous breeds thereby accentuating their individuality and potential for breed preservation.

Adaptability : Indigenous bovines exhibit an extraordinary capacity for adaptation to local environs. They have evolved within diverse ecological settings, ranging from mountainous territories to arid plains and have engendered inherent resistance to various diseases and parasites endemic to these habitats. The study endeavors to investigate the specific mechanisms and genetic markers responsible for their adaptability, which can inform breeding programs and augment the resilience of commercial breeds.

Milk Composition : Indigenous bovines are recognized for harboring distinctive milk compositions that differ from those of commercial breeds. Preliminary studies suggest that the milk derived from indigenous cows may encompass elevated levels of salutary constituents such as Omega-3 Fatty Acids, Conjugated Linoleic Acid (CLA) and select antioxidants. Scrutinizing the milk composition of indigenous bovines in this research study endeavor, will foster an enhanced comprehension of their nutritional worth and potential health advantages.

Ecological Significance : Indigenous bovines play an indispensable role within sustainable farming systems and contribute to biodiversity conservation. By virtue of their adaptation to local environs, they often necessitate diminished external inputs, rendering them appropriate for organic and low-input agricultural practices. Furthermore, their grazing patterns and interactions with the ecosystem foster biodiversity by sustaining grasslands, dispersing seeds and alleviating the proliferation of invasive species. Evaluating the ecological impact of indigenous bovines will certainly accentuate their prominent role within sustainable agricultural landscapes.

Conclusion : This modest scientific research study aspires to explore the uniqueness of indigenous bovines through a multidisciplinary approach. By scrutinizing their genetic diversity, adaptability, milk composition and ecological significance, we can attain an in-depth comprehension of their value within agricultural systems. The findings of this research endeavor will contribute to the preservation and propagation of indigenous bovines, empowering local communities and fostering sustainable farming practices.

Future Directions : While this research study offers invaluable insights into the uniqueness of indigenous bovines, further investigations are warranted to delve into other facets, such as their meat quality, heat tolerance and socio-economic impacts. Additionally, collaborations with local communities, policymakers and stakeholders are also quite indispensable for the efficacious implementation of conservation programs and the preservation of indigenous cattle breeds for future generations.

Dr. Aastha Pathak

PANCHGAVYA

Panchgavya represents milk, urine, dung, ghee, and curd, derived from cow and serves irreplaceable medicinal importance in Ayurveda and traditional Indian clinical practices. In Ayurveda, Panchgavya treatment is termed as 'Cowpathy'. In India, the cow is worshipped as a god called 'Gaumata', indicating its nourishing nature like a mother. Ayurveda recommends Panchagavya to treat diseases of multiple systems, including severe conditions, with almost no side-effects. It can help build a healthy population, alternative sources of energy, complete nutritional requirements, eradicate poverty, pollution-free environment, organic farming, etc. Panchgavya can also give back to mother nature by promoting soil fertility, earthworm production, protecting crops from bacterial and fungal infections, etc. Scientific efforts shall be taken to build evidence for the clinical application of Cowpathy. The present review aims to summarize the health and medicinal benefits of Panchgavya.

India is the land of traditions with its roots in ancient science directly linking social rituals and scientific reasons behind them. In India, a cow is called 'Gaumata' or 'Kamadhenu' due to its nourishing nature like a mother. Kamadhenu is the name of the sacred cow who believed to accomplish desired things. Panchgavya is a treasure of health benefits and medicinal properties. The Ayurvedic system of medicine has described the significance of using cow milk, ghee, urine, dung, and curd, each of which is termed 'gavya' (i.e., obtained from 'Gau' means cow) for the treatment of various diseases. Each product possesses different components and uses for human health, agriculture, and other purposes. 'Panchgavya' has been derived from two words, 'Panch' meaning five and 'gavya' meaning obtained from 'Gau' means cow, which in-toto represents five products obtained from a cow. Each of

the 'gavya' exerts a different medicinal impact against various diseases. Panchgavya therapy or treatment is called 'Cowpathy', similar to other pathies (allopathy, homeopathy, and naturopathy). Each 'gavya' can be used as a single therapy or in combination with other products or with other treatments. Also, all five products can be used alone or combined or any other synthetic, herbal, or mineral origin.

Panchgavya therapy is recommended for a variety of diseases viz., asthma, flu, allergies, cardiovascular diseases, renal disorders, rheumatoid arthritis, leucoderma, wound healing, leucorrhoea, hepatitis, dietary and gastrointestinal tract disorders, obesity, tuberculosis, ulcer, chemical intoxication, other bacterial, fungal and viral infections. The therapy has also demonstrated its therapeutic potential against severe pathological conditions like cancer, AIDS, and diabetes.

Panchgavya plays a crucial role in organic farming practices as the most favourable organic manure for agricultural fields. Its application ensures zero usage of harmful synthetic fertilizers, pesticides, insecticides, and antibiotics. No other manure can be as cost-effective and beneficial as Panchgavya. It can enhance soil fertility, improve the quality of earthworms, and promote crop health by acting as an organic fertilizer. Additionally, cow dung and cow urine are excellent sources of energy to generate biogas and electricity.

Traditional Indian literature cities numerous medicinal effects of Panchgavya; however, scientific evidence supporting ancient literature is very little. Scientific Validation and Research on Panchgavya (SVAROP) is a national program announced by the Ministry of Science and Technology, Government of India, for scientific validation of Panchgavya products. The program includes studies on the activity, efficacy, safety profile, toxicity, and acceptability of Panchgavya and other products obtained from the cow. The present review focuses on the composition of each Panchgavya product and its health benefits and medicinal properties based on available scientific evidence.

Therapeutic effects of Panchagavya

Analgesic effect

Cow urine (2 ml, oral) and its distillate (2 ml, oral) were analyzed for analgesic activity in rats of both sexes (150–200 g) using the rat tail immersion test and Diclofenac Sodium (50 mg/kg, oral) as a reference standard. In the tail immersion test, the time taken for reflex action was recorded at 0th, 30th, 60th, and 90th minute after administration indicated analgesic effect. The analgesic effect was due to steroidal constituents and volatile fatty acids, which were confirmed using sophisticated analytical techniques in

other studies. Ayurveda recommends using cow urine in pain relief, and the study served as scientific evidence for its acceptance in the modern world.

Hepatoprotective effect

PGG demonstrated hepatoprotective potential at a dose of 150–300 mg/kg, p.o. against carbon tetrachloride (CCl_4)-induced hepatotoxicity in males albino rats of Sprague Dawley strain. Serum marker enzymes, i.e., serum glutamate oxaloacetate transaminase (SGOT), serum glutamate pyruvate transaminase (SGPT), alkaline phosphatase (ALP), acid phosphatase (ACP) were estimated to assess the liver function by taking Silymarin as a reference standard. PGG formulation was significantly active against CCl_4-induced elevation in SGOT, SGPT, ALP, and ACP, preventing the elevation of these enzymes comparable with Silymarin. Phospholipids influence the repair mechanisms with elevated thymidylate synthetase and thymidine kinase levels in the liver, reaching a peak at 72 h demonstrating liver regeneration.

Anti-haemorroid activity

Hemorrhoids are symptomatic enlargement and distal displacement of the anal mucosa. Treatment of 250 mg of gaumutra-ghana (extract of cow urine) along with the water was given twice daily for 30 days to patients of both sexes diagnosed with haemorrhoids of grade I and II. Consumption of cow urine exerted positive effects on the large intestine. Clinical evaluation supported cow urine as oral supplementation to relieve pain, ease defecation, prevent itching, and bleeding.

Wound healing activity

Cow ghee has demonstrated potential wound healing activity. High saturated and unsaturated fatty acid content is supposed to have participated in wound healing [65]. A study was conducted to examine the healing ability of cow ghee in combination with Aegle marmelos leaves extract and evaluated

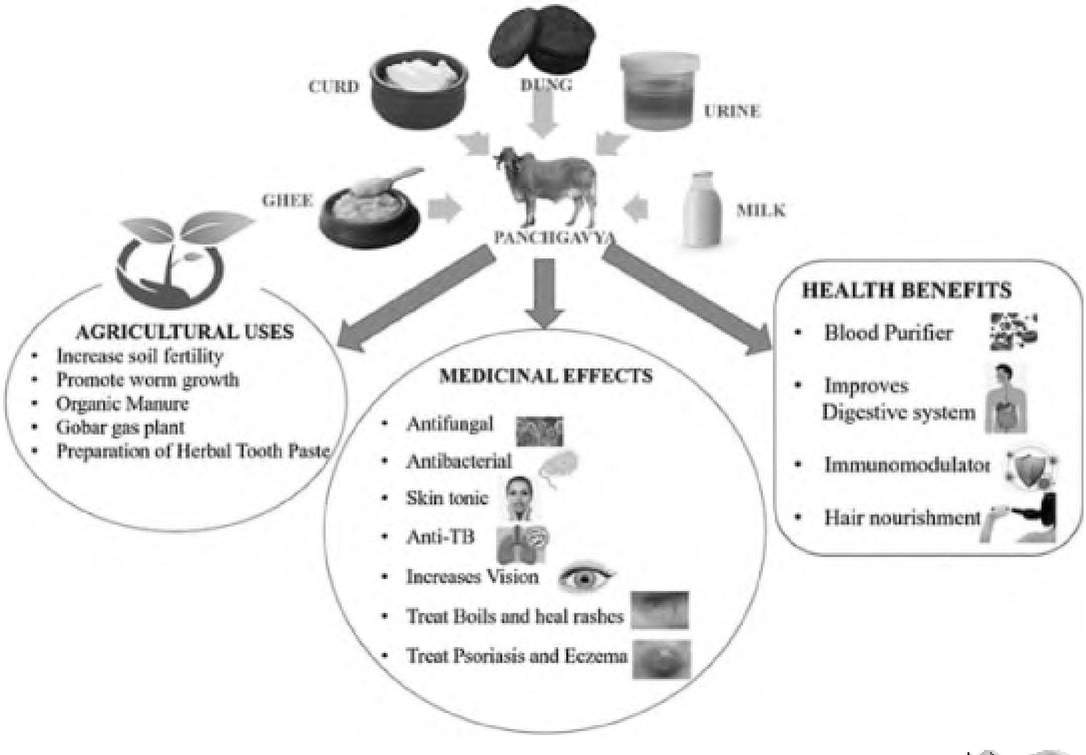

for the various parameters, i.e., decrease in the area of the wound, wound closure, wound contraction, and tissue regeneration at the damaged area. The combination demonstrated rapid wound healing within eight days.

Cow ghee was also evaluated with Aloe vera for wound healing potential by topical application 0.5 g of formulated gel. Wound contraction ceased between 21 and 24 days, increasing epithelization, providing tensile strength, and promoting collagen formation. The therapeutic intensity of wound healing was comparable with 0.5 g Framycetin sulphate cream (1% w/w).

Effect on eyes

Computer Vision Syndrome (CVS) is a common problem across the globe, characterized by drying of eyes, burning sensation, itching, and redness. Lubricating eye drops are used for the treatment, and their regular use can cause damage to the eyes due to preservatives. Cow ghee has a lubricating property that can be used to treat CVS without any harmful effects. Cow ghee has Vitamin A which helps maintain moisture in the outer lining of the eyeball and prevents dryness and blindness.

Anti-Microbial Cctivity

Anti-microbial activity of cow urine and cow urine distillate was tested against pathogens like Bacillus subtilis, Salmonella typhi, Klebsiella pneumonia, and Pseudomonas aeruginosa. Cow urine distillate (at 5, 10 and 15 μl) demonstrated maximum activity (zone of inhibition) against P. aeruginosa (7.06 ± 0.05, 8.08 ± 0.18 and 10.4 ± 1.23, mm in diameter, respectively) and S. typhi (6.3 ± 1.23, 8.06 ± 0.17 and 10.4 ± 1.2, mm in diameter, respectively). Cow urine and distillate also demonstrated free radical scavenging activity. Fresh cow urine was comparatively more effective than distillate. Ofloxacin was considered the standard, and the anti-microbial activity of fresh cow urine was comparable with Ofloxacin.

Anti-Epileptic Effect

PGG was examined for anti-epileptic activity using a rat model of maximal electroshock (MES) induced convulsions. PGG demonstrated anti-convulsant activity by increasing the motor activity of rats. The formulation also successfully inhibited the phenobarbitone-induced sleep time. The PGG is recommended as adjuvant therapy in treating epilepsy.

Anti-cancer Effect

A comparative evaluation of cow ghee and soyabean oil in a rat model of 7,12-dimethylbenz(a)-anthracene (DMBA) induced mammary carcinogenesis revealed the anti-cancer potential of cow ghee by expressing cox-2 and peroxisome proliferators activated receptors-γ(PPAR-γ) in mammary glands. The group receiving cow

ghee had lower tumour incidences (26.6%), low tumour weight (1.67 g), and volume (1925 mm3) compared to the group receiving soyabean oil (65.4%,6.18 g, 6285 mm3). Cow urine has also demonstrated its potential as an antineoplastic agent.

Panchgavya has demonstrated its potential to serve humankind and is a promising therapy against various human ailments. The effects of Panchgavya must not be limited only to ancient literature although, scientific efforts are needed to validate biological activities and safety and establish the standards. Detailed experimentations are required for each product to validate composition, chemical behaviour, pharmacological activity, safety, toxicity profile, and the mechanism of action of the active components. It is equally important to educate the people and promote Panchgavya products to seek the world's attention towards India's rich traditional practice and literature.

फार्म 4 नियम 8

समाचार पत्र का नाम	**गोसम्पदा**
समाचार पत्र की पंजीकरण संख्या	69508 / 98
भाषा	हिन्दी / अंग्रेजी
प्रकाशन की अवधि	**मासिक**
समाचार पत्र का फुटकर मूल्य	15 रु. मात्र
प्रकाशक का नाम	**राजेन्द्र सिंहल**
राष्ट्रीयता	भारतीय
पता	संकटमोचन आश्रम, से.–6,रामकृष्णपुरम नई दिल्ली–110 022
मुद्रक का नाम	**रायल प्रेस**
राष्ट्रीयता	भारतीय
पता	बी 81, ओखला इंडस्ट्रीयल एरिया, फेस–1, नई दिल्ली
सम्पादक का नाम	**देवेन्द्र नायक**
राष्ट्रीयता	भारतीय
पता	संकटमोचन आश्रम, से.–6,रामकृष्णपुरम नई दिल्ली–110 022
मुद्रण स्थान	रायल प्रेस, बी 81, ओखला इंडस्ट्रीयल एरिया, फेस–1, नई दिल्ली
प्रकाशन स्थान	संकटमोचन आश्रम, से.–6,रामकृष्णपुरम नई दिल्ली–110 022

मैं राजेन्द्र सिंहल, प्रकाशक, मुद्रक 'गोसम्पदा' घोषणा करता हूँ कि उपरोक्त विवरण मेरी जानकारी और विश्वास के अनुसार सत्य है।

राजेन्द्र सिंहल
प्रकाशक–गोसम्पदा

BHIM UPI Payments Accepted at
BHARTIYA GOVANSH RAKSHAN SAMVARDHAN PARISHAD

Account Number : 04072010006910, IFSC Code: PUNB0040710

Scan and Pay using any UPI supported Apps

गोसम्पदा पत्रिका के
सदस्य बनने के लिए
सदस्यता राशि UPI द्वारा
भुगतान कर सकते हैं

सत्संग क्यों जरूरी?

एक बार मुझसे पूछा गया, 'बाबा, बुद्धिमान मनुष्य कौन है? प्रश्न बहुत ही सहज है, मगर इसका रहस्य गूढ़ है। अब ध्यान से सुनो। जो कहता है कि केवल उन्हीं बातों को सुनूंगा, जिनको सुनने से मन परमपुरुष की ओर बढ़ेगा, केवल उन्हीं बातों को सोचूंगा, जिनको सोचने से मन परमपुरुष की ओर बढ़ता जाएगा, केवल उसी को मन का विषय बनाऊंगा, जिसकी भावना लेने से मन जड़ से चैतन्य की ओर बढ़ता जाएगा, ऐसा मनुष्य बुद्धिमान है।

बुद्धिमान मनुष्य का काम क्या है? ऐसे मनुष्य के लिए उचित है कि ज्ञानेंद्रियों के जरिये मन जो कुछ भी ग्रहण करे, उसमें ईश्वर की भावना हो। ठीक उसी तरह, कर्मेंद्रियों से मनुष्य जो कुछ करे, उनके प्रति उसे यह भावना लेनी होगी कि वे सभी वस्तुएं परमात्मा के ही विशेष रूप हैं। ऐसे में, वह बाहर की जिस भी वस्तु के संपर्क में आएगा, वह ईश्वर की भावना के साथ होगा, तो वह आध्यात्मिक साधना का स्वरूप बन जाएगा। याद रखिए, श्रवण, मनन और ध्यान के जरिये मनुष्य पुण्य अर्जन करता है। फिर महापुरुषों के दर्शन या स्पर्श से भी पुण्य अर्जन होता है। यह कैसे होता है? अचानक मन में एक भावना का उदय होता है कि मैं इस विराट, इस महान व्यक्ति के संपर्क में आ गया हूं। यह भावना मन में लगातार बढ़ती रहती है। इस भावना के बढ़ते रहने के कारण मन सुपवित्र होता रहता है। इससे मनुष्य का कल्याण होता है। इसी प्रकार, महापुरुषों के स्पर्श से भी मन सुपवित्र होता है, उसका कल्याण होता है। इसलिए यह कहना बहुत ही संगत है कि महापुरुषों के दर्शन या स्पर्श से जीव की मानसिक और आध्यात्मिक उन्नति होती है। जहां दर्शन या स्पर्श के बदले मन में नजदीक जाने की भावना होती है, वहां न दर्शन करने की आवश्यकता होती है, और न स्पर्श करने की।

श्रवण शब्द को रखा गया है धर्म के प्रचार के लिए। मानव मन में सात्विक भाव जगाने के लिए श्रवण की आवश्यकता है। आप जब कीर्तन करते हैं, तब उससे केवल आप ही आनंद पाते हैं, ऐसी बात नहीं है। आपके मुंह से जो उच्चरित होता है, जब वह दूसरों के कानों में पड़ता है, तो उनकी प्रगति होती है। उनकी भी उन्नति होती है, उनका भी कल्याण होता है। इसलिए यहां श्रवण शब्द को महत्व दिया गया है। दूसरा है **मनन**। अच्छा हो या बुरा, काम हमारा मन ही करता है। केवल हाथ–पैर काम नहीं करते। हाथ से चोरी करने का अर्थ है कि मन चोरी कर रहा है। इसलिए मनन क्रिया के ऊपर अधिक जोर दिया जाता है। सत्संग के फलस्वरूप, साधु–संगत में मन अच्छी बातों को लेकर चिंतन करता है। फलस्वरूप मानसिक उन्नति होती है, और मानसिक उन्नति का अर्थ है, पूरे मनुष्य की उन्नति !

– श्री श्री आनंदमूर्ति

"LPC DELHI, DELHI PSO, DELHI RMS, DELHI-6"
Email : gosampada@gmail.com
website : www.vhp.org

Registered No. DL-SW-01/4027/24-26
RNI No. 69508/98 प्रस्तुति : 13–14
प्रकाशन तिथि : 11 मई, 2024

प्रकाशक व मुद्रक राजेन्द्र प्रसाद सिंहल ने रायल प्रेस,
बी 81, ओखला इंडस्ट्रीयल एरिया, फेस-1, नई दिल्ली से मुद्रित कर भारतीय गोवंश रक्षण संवर्धन परिषद् (विहिप)
संकटमोचन आश्रम, सेक्टर-6, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली-22 के लिए प्रकाशित की। संपादक – देवेन्द्र नायक